त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम भारतीय संगीत शास्त्र
बी.ए. प्रथम वर्ष परीक्षा 2007–2008 से प्रभावी
कंठ

संगीत प्रथम प्रश्नपत्र – संगीत विज्ञान पूर्णांक : 40

1. अधोलिखित विषयों का ज्ञान– श्रुतियां, भरत के स्वर स्थान, सोमनाथ तथा भातखण्डे द्वारा विभिन्न श्रुतियों पर स्थापित सप्तक के स्वर स्थान ।
2. पंडित अहोबल और श्रीनिवास द्वारा वीणा पर स्वर स्थापन के सिद्धान्त।
3. सप्तक के विभिन्न स्वरों में सांगीतिक स्वरान्तर मेजरटोन, माइनर टोन और सेमीटोन।
4. सम्बनता और विम्बनता।
5. ग्राम, जाति गायन, मूर्च्छना, न्यास, सन्यास, विन्यास, स्वस्थान नियम।
6. संगीत सम्बन्धी विषयों पर संक्षिप्त निबन्ध लिखने का अभ्यास।

द्वितीय प्रश्नपत्र – रागों और तालों का अध्ययन पूर्णांक : 40

1. शुद्ध, छायालग और संकीर्ण राग, गीत, गान्धर्व, गान, देशी तथा मार्गी संगीत का ज्ञान।
2. अधोलिखित रागों का आरोह, अवरोह, पकड़ एवं मुख्य स्वर समुदायों तथा समस्त विशेषताओं सहित विस्तृत एवं तुलनात्मक अध्ययन– देशकार, गौड़सारंग, हिंडोल, दुर्गा जैजैवंती, कामोद, शंकरा और बागेश्वरी।
3. आलाप के माध्यम से राग पहचानने तथा रागों में अन्तर स्पष्ट करने की क्षमता।
4. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों के ख्यालों को आलाप व तानसहित स्वरलिपि में लिखने का अभ्यास।
5. ध्रुपद एवं धमार को दुगुन, तिगुन व चौगुन सहित स्वरलिपि में लिखना।
6. अधोलिखित तालों एवं उनके ठेकों के दुगुन, तिगुन, तथा चौगुन में लिखने का ज्ञान। तीनताल, झपताल, चारताल और तिलवाड़ा।
7. निम्नलिखित संगीतज्ञों का जीवन परिचय तथा उनकी देन– स्वामी हरिदास, सदारंग, अदारंग, पंडित भातखण्डे और अमीर खुसरो।

क्रियात्मक परीक्षा

प्रथम प्रश्नपत्र **40 अंक**

कुल अंक **70**

1. अधोलिखित रागों में पूर्ण गायकी सहित एक– एक द्रुत ख्याल, देशकार, गौरसारंग, हिंडोल, दुर्गा, जैजैवतंती, कामोद शंकरा और बागेश्वरी।
2. पाठ्यक्रम में वर्णित रागों में से किन्ही दो रागों में विलम्बित ख्याल पूर्ण गायकी सहित गाने का अभ्यास।

3. पाठ्यक्रम के रागों में से किसी एक राग में एक ध्रुपद लयकारी सहित गाने की क्षमता।
4. पाठ्यक्रम के रागों में से किसी एक राग में एक धमार लयकारी सहित गाने का अभ्यास।
5. किसी राग में एक तराना अथवा भजन।
6. परीक्षार्थी को अधोलिखित तालों का ज्ञान आवश्यक– तीनताल, झपताल, चारताल और तिलवाड़ा।

द्वितीय प्रश्न पत्र – 30
मौखिक परीक्षा
बी.ए. प्रथम वर्ष परीक्षा 2007–2008 से प्रभावी
वाद्य संगीत

वर्ग अ : तंत्र एवं सुषिर वाद्य (वीणा, सरोद, सितार, इसराज, गिटार, बायलिन और बांसुरी)

प्रथम प्रश्नपत्र – संगीत विज्ञान **अंक : 40**

1. श्रुतियां तथा भरत के स्वर स्थान, सोमनाथ और भातखण्डे द्वारा विभिन्न श्रुतियों पर स्थापित सप्तक के स्वर स्थान का ज्ञान।
2. पंडित अहोबल और श्रीनिवास द्वारा वीणा पर स्वर स्थापन के सिद्धान्त।
3. सप्तक के विभिन्न स्वरों से सांगीतिक स्वरांतर, मेजरटोंन, माइनर–टोन, सेमीटोन।
4. सम्बनता और विम्बनता।
5. न्यास, सन्यास, विन्यास, जाति गायन, ग्राम और मूर्च्छना का ज्ञान।
6. अधोलिखित की परिभाषा –
   घसीट, कश्न्तन, कम्पन, गमक, सूत और गत।
7. मिजराब या जवा द्वारा विभिन्न लयकारियों का ज्ञान।
8. संगीत संबंधी सामान्य विषयों पर संक्षिप्त निबन्ध लिखना।

द्वितीय प्रश्न पत्र **अंक 40**

रागों और तालों का अध्ययन

1. अधोलिखित रागों के आरोह, अवरोह, पकड़, मुख्य स्वर समूह एवं संपूर्ण विशेषताओं सहित विस्तृत तथा तुलनात्मक अध्ययन गौड़सारंग बहार, तोड़ी, जैजैवंती, कामोद, छायानट, बागेश्वरी और सोहनी।
2. शुद्ध छायालग और संकीर्ण राग, गीत, गान्धर्व, गान देशी तथा मार्गी संगीत का ज्ञान।

3. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों में आलाप के माध्यम से रागरूप पहचानने तथा रागों में अन्तर स्पष्ट करने की योग्यता।
4. गतों को तोड़ों तथा झाला सहित स्वरलिपि में लिखने का अभ्यास।
5. अधोलिखित तालों एवं उनके ठेकों को विभिन्न लयकारियों में लिखने की क्षमता– तीनताल, झपताल, एकताल, चौताल और आड़ाचौताल।
6. निम्नलिखित संगीतज्ञों की जीवनी एवं उनकी देन– तानसेन, वजीर खाँ, पन्नालाल घोष और प्रोफेसर बी.जी. जोग।

क्रियात्मक परीक्षा

प्रथम प्रश्नपत्र **40 अंक**

कुल अंक – **70**

1. अधोलिखित रागों में एक–एक रजाखानी गत, तोड़े तथा झाला सहित गौड़सांरग, बहार, तोड़ी, जैजैवंती, कामोद छायानट, बागेश्वरी और सोहनी।
2. उपर्युक्त वर्णित रागों में से किन्हीं पाँच रागों में मसीतखानी गत तथा तोड़े।
3. वर्णित रागों में से किन्हीं दो रागों में आलाप एवं जोड़ आलाप बजाने की क्षमता।
4. अधोलिखित तालों का ज्ञान आवश्यक– तीनताल, झपताल, एकताल, चौताल और आड़ाचौताल।

द्वितीय प्रश्न पत्र **प्रश्न पत्र : 30**

मौखिक परीक्षा

बी.ए. प्रथम वर्ष परीक्षा 2007–2008 से प्रभावी
वाद्य
संगीत वर्ग ब : अवनद्ध वाद्य (तबला और पखावज)

प्रथम प्रश्न पत्र – संगीत विज्ञान **अंक 40**

1. संगीत की परिभाषा और उसके अंग।
2. सागीतिक और असांगीतिक ध्वनियाँ एवं प्रतिध्वनि।
3. ताल की परिभाषा के विषय में विभिन्न विद्वानों के विचार।
4. ताल के दस प्राणों का विस्तृत अध्ययन।
5. भारत में अवनद्व वाद्यों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि।
6. संगीत सम्बन्धी सामान्य विषयों पर संक्षिप्त निबन्ध लिखने का अभ्यास।

द्वितीय प्रश्न पत्र : तालों का अध्ययन **अंक 40**

1. अधोलिखित शब्दों की परिभाषा –
   आड़, कुआड़, विआड़, कायदा, पलटा, रेला, मोहरा, मुखड़ा, टुकड़ा, चक्करदार, परन, उठान, सम, विषम, अतीत और अनागत, तिपल्ली–चौपल्ली और लोम विलोम।
2. भातखण्डे और विष्णु दिगम्बर ताल लिपि पद्धतियों में कायदे, परन, उठान, तिहाई एवं रेला लिखने का अभ्यास।
3. तीनताल, झपताल, तिलवाड़ा, रूद्र, बसंत, गजझंपा, चौताल और धमार ताल को विभिन्न लयकारियों में लिखने का अभ्यास।
4. समान मात्राओं के विभिन्न तालों का तुलनात्मक अध्ययन।
5. सोलो वादन एवं संगति करने का सिद्धान्त।
6. भारत के विभिन्न अवनद्ध वाद्यों की उपयोगिता और प्रयोग।
7. ताल रचना के सिद्धान्त।
8. निम्नलिखित वादकों की जीवनियां एवं उनकी देन :
   कंठेमहाराज, अहमद जान–थिरकुवा, खलीफा आबिद हुसैन और अल्ला रखाँ।

क्रियात्मक परीक्षा

प्रथम प्रश्नपत्र **40 अंक**

कुल अंक **70**

1. तीनताल और झपताल को सविस्तार बजाना जिसमें पेशकार, विभिन्न शैलियों के पाँच–पाँच कायदे पल्टों सहित, दो गत मुखड़ा, दो रेला और पाँच टुकड़े आवश्यक हैं।

2. तिलवाड़ा गजझंपा, रूद्र, बसंत झूमरा तालों के ठेकों को तबले पर बजाना एवं हाथ से ताल देकर बोलना, चारताल तथा धमार ताल को पखावज अंक से बजाना एवं उनमें टुकड़े और परन बजाने की क्षमता।
3. अधोलिखित तालों के ठेके सीखना और उन्हें ताली देकर बराबर, दुगुन तथा चौगुन की लयकारियों में बोलना– पंजाबी, झूमरा, मतताल और शिखर ताल।
4. तबला और पखावज वाद्य के विद्यार्थियों को सोलो वादन के अतिरिक्त संगत करने की योग्यता अपेक्षित।

नोट : पाठ्यक्रम में दिये गये प्रत्येक ताल का पूर्ण परिचय अर्थात प्रयोग विधि तथा प्रयोग सामग्री जानना आवश्यक है।

द्वितीय प्रश्नपत्र **30 अंक**

मौखिक परीक्षा